International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 438-440

आसियान में भारत की चुनौतियां और सम्भावना

डॉ. दुर्गेश सिंह
पी–एच॰डी॰ राजनीति विज्ञान, राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

आशियन की स्थापना 1967 में बैंकाक घोषणा के द्वारा हुई। आरम्भ में 5 देशों का संगठन था जिसमें इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड शामिल थे। उस दौर में वियतनाम समस्याग्रस्त था तथा कंबोडिया, लाओस एवं वर्मा में राजनैतिक समस्याएं मौजूद थी। ऐसे में ये देश एकजुट होर एक प्रकार की नीतियों के आधार पर अपने हितों को बचाए रखने का प्रयास कर रहे थे। शीतयुद्धोतर विश्व में इस संगठन का मुख्यालय जकार्ता में स्थित है। इस संगठन के आरम्भिक उद्देश्य में वस्तुतः मुक्त व्यापार की नीतियों को आधर बनाकर आर्थिक विकास हासिल करना शामिल था। यह माना गया था कि एक समान नीतियों के आधार पर सबके जरूरतों की पूर्ति होगी। एक जैसी समस्या से ग्रस्त होने के कारण सभी देश एक दूसरे की मदद में सक्षम होंगे और आपसी सहयेाग का सबको लाभ होगा।

अपनी स्थापना के आरंभिक दौर में तो कुछ खास हासिल न कर सका किन्तु वियतनाम संकट समाप्त होने के बाद इसका तेज विकास होता गया 80 के दशक में इसने अभूतपूर्व प्रगति हासिल की एवं यह संगठन एशिया प्रशांत क्षेत्र के विकास का इंजन सबित हुआ। 90 के दश्का में यह एक मजबूत आर्थिक संगठन के रूप में विश्व में उभरा। किन्तु 1997 के आसपास यह क्षेत्र एक वित्तीय संकठ से गुजरा इससे उबरने के प्रयास आरंभ हुए एवं वर्ष 2001 तक आशियान इस समस्या से बाहर निकल चुका था। वर्ष 2000 में आशियान + 3 की संरचना बनी तथा चीन जापान एवं दक्षिण कोरिया को इसमें शामिल किया गया। आसियान भारत के साथ मुक्त व्यापार का लाभ बांटना चाहता है। एवं इस संबंध में भारत तथा आसियान के बीच समझौता हो चुका है।

ASEAN भारत

''एक समय ऐसा भी रहा कि स्वयं दक्षिण–पूर्व एशिया के देश आन्तरिक राजनतिक दबावों के कारण अत्यंत व्यस्त रहे। इनमें से किसी के लिए भी उभयपक्षीय कसौटी पर भारत के साथ सम्बन्ध प्राथमिकता वाले नहीं थे। मलेशिया और सिंगापुर आपसी सम्बन्धों के सामान्यीकरण में व्यस्त रहे तो कम्यूचिया में 1970 में हिंसनुक की तख्तापलट के साथ वंशनाशक आत्मघाती गृह युद्ध के आरम्भ ने हिन्द चीन के भविष्य पर कई प्रश्न चिन्ह लगा दिये। वियतनाम में गृहयुद्ध की समाप्ति और पुर्नएकीकरण से भी स्थित सहज एवं स्थिर नहीं हुई क्योंकि विपतनाम चीन सम्बन्धों में तनाव बढ़ने के साथ 'एक सीमित शीत' युद्ध इस क्षेत्र में सतह पर उभर आया। म्यामार ने तो 1962 से ही अपनी अलग एकांतवासी राह चुन ली थी। इस दौर से ही जापान और आस्ट्रेलिया ने दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में अपना आर्थिक प्रभाव बढ़ाया और उनकी इस घुसपैठ के साथ ही दक्षिण पूर्व एशिया के भारत जैसे पारम्परिक मित्रों का प्रभाव इस क्षेत्रा में कम हुआ।''[1]

इसके साथ ही कुछ ऐसी प्रवृत्तियां घटनाएं सामने आयी, जिन्होंने भारत को 'निराशाजनक अवमूल्यन' से बचाया 1971 मे बांग्लादेश मुक्ति में भारत ने अपने सैन्य बल का प्रदर्शन किया, हरित क्रांति की सफलता ने भारत को खाद्यानों के मामले में आत्मनिर्भर बनाया और उसके आत्म सम्मान को लौटाया इन सब बातों का मिला–जुला प्रभाव यह हुआ कि दक्षिण पूर्व एशिया के लिए यह असम्भव हो गया कि वह अंतर्राष्ट्रीय राजनतिक सन्दर्भ में भातर की अवहलेना कर सके।

1980 के दशक के दूसरे हिस्से में भारत की पुरानी आयात प्रतिस्थापन व निर्यात संवर्धन की नीति को व्यापार के हर तरह से प्रतिबंधों क्षेत्रों की वजह से आधात लगा और 1990 के दशक के आरम्भ में भारत दिवालियपन के कगार पर आ खड़ा हुआ था। इसी समय भारत अपनी आर्थिक नीति में बड़ा बदलाव लाता है। अब भारत व्यापार के उदारीकृत मूल्यों को अपनाने की सोचने लगा जो कि सोवियत संघ के टूटने से जरूरी हो गया। 1992 में नरसिंह राव ने पूर्व की ओर देखो नीति बनाइ जिसे श्री वाजपेई ने 'ओपन स्काई' नीति बनाकर पूरे जोर से आगे बढ़ाई ताकि भारत के ASEAN देशों से सम्बन्ध बेहतर हो सके।''[2] ओपन स्काई नीति भारत के महानगरों व दस ASEAN देशों की राजधानियों के बीच परिपूर्ण समन्वय लाने के लिए प्रस्तुत की गई थी जो कि भारत के शत्रु देशों की कूटनीत पर काफी प्रभाव डाल सकती थी। क्योंकि यह भारत आसियान के बीच एकता का संकेत है।''[3]

ASEAN और भारत के बीच सहयोग के प्रमुख कारणों में सेवा क्षेत्र में भारत की अभूतपर्व सफलता और पूर्व एशियाई देशों पर चीन का बढ़ता प्रभाव व दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों में आतंकवाद का उदय। चूंकि आतंकवाद नशीले दवाओं के अवैध व्यापार, काले धन को वैध बनाने व धर्मिक अतिवाद से निकटता से जुड़ा हुआ है और भारत की भौगोलिक स्थिति व उसके आतंकवाद व उससे जुड़ी मुद्दों से निपटने के अनुभव के कारण ASEAN देश भारत से सहयोग चाहते हैं। भारत की (Look East Policy) की कुछ प्रमुख उपलधियां रही है जो भारत और आसियान ASEAN के बीच संबंधों की समीक्षा करती है। पहला भारत 1992 में क्षेत्रीय संवाद साझेदार की बजाय अब 1995 में ASEAN सदस्यों द्वारा संचालित एशिया पैसिफिक में सुरक्षा सहयेाग परिषद और ASEAN प्रादेशिक कोरम के अन्तर्गत भारत की स्थिति ने उसे सुरक्षा सम्बन्धी यन.... बहुपक्षीय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का दायित्व सौंपा दूसरे, भारत ने फलतः यह सुनिश्चित कर दिया है कि उसके सुरक्षा के मामले इन बहुपक्षीय समूहों की मान्यता से जुड़े है। तीसरे वार्षिक रूप से भारत आसियान (ASEAN) शिखर सम्मेलनों की मेजबानी का समझौता एक बहुत बड़ा कदम है क्योंकि इसके फलस्वरूप ASEAN की वार्षिक प्रक्रियाओं में एक औपचारिक संरचना के रूप

में संस्थानीकरण हो जाएगा। तीसरे व्यापार एक महत्वपूर्ण आयाम बन सकता है और भारत WTO की संरचना के भीतर विस्तुत आर्थिक संबंध बना सकता है तथा वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियां सुरक्षा पहले और शक्ति संतुलन के महत्व क्षेत्र में अपना वर्चश्प बनाए रखेंगे। प्रादेशिक संतुलन को बनाए रखने वाले महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में भारत की ओर ASEAN की पश्चिम अभिमुखी नति ;स्ववापदह मेजद्ध ASEAN राज्यों और चीन के दृष्टिकोण के बीच संतुलन बनाए रखेगी। हालांकि इस क्षेत्र के साथ चीन का व्यापक आर्थिक एकीकरण है परन्तु पिफर भी भावी समय में इसकी राजनीतिक भूमिका को लेकर संशय है। इसका सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण स्प्रैटली द्वीप मामले से सम्बन्धित समझौता जिसमें चीन ने कहा कि कोई भी समझौता बिना पक्षपात के उसके हित में होना चाहिए या वियतनाम के साथ पैरासेल आइलैण्ड जान्सनरीफ मुद्दे पर टकराव। अतः चीन का ASEAN के प्रति संशयपूर्ण रवैया भारत के लिए एक अवसर व चुनौती दोनों है।''[4]

भारत आसियान सहयोग का महत्व

आज विश्व राजनीति का गुरूत्व केन्द्र एशिया प्रसांत की ओर बढ़ रहा हैं भारत ने अपने पूर्व की ओर देखों नति ऐसे रूपांकित की गई है कि भारत इस क्षेत्र की राजनीति को अपने राष्ट्रीय सरोकरों के अनुरूप गठन में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।''[5] भारत की पूर्व की ओर देखो नीति स्वभाव में बहुआयामी है। दक्षिण–पूर्व एशिया व एशिया प्रशांत क्षेत्र के सथ आर्थिक सहयोग के अलावा इस नीति के सामरिक व राजनतिक पहलू भी बेहद महत्व के है। इस भूक्षेत्र में चीन एक ताकतवर प्रतिस्पर्धी है। वही भारत–चीन में कुछ सामान्य साझेहिट भी है। दोनों तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएं है। दोनों विकास के लिए स्थायी वातावरण चाहते है। व एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था के खिलाफ एक स्वर में आवाज उठाते हैं। भारत का ताकत के रूप में उभरना व अमरीका का एशिया प्रशांत की ओर झुकाव चीन के लिए अत्यन्त चुनौतीपूर्ण हैं और इसलिए वह अपने सैन्य ताकत के बल पर हवाई अड्डे, बंदरगाह, रेलवे तंत्र के रूप में अपनी आधरभूत संरचना के विकास से अन्य राज्यों को अभीभूत करना चाहता है। दूसरी ओर पूर्व की ओर देखो नीति का प्रमुख लक्ष्य है अमरीका की दक्षिण पूर्व एशिया व एशिया प्रशांत क्षेत्रा में सैन्य श्रेष्ठता के साथ सामंजस्य बिठाना व चीन के प्रभाव को संतुलित रखना। यही सिद्धांत क्षेत्रीय सुरक्षा में भारत की भूमिका को भी प्रोत्साहित करती है। यद्यपि क्षेत्र में भारत की पहुंच है लेकिन अभी उसकी स्थित अमरीका चीन जापान की तुलना में कम प्रभावपूर्ण है।''[6]

चीन का प्रभुत्व और भारत की चिंता

चीन का जापान के साथ सेनकाकू आइलैण्ड विवाद, पैरासल द्वीप विवाद वियतनाम के साथ और पिराचंकरीफ विवाद फिलीपीन्स के साथ, इन मुद्दों ने क्षेत्रा में तनाव का वातारवण बना रखा है।

ऐसी स्थिति में भारत का ASEAN और पूर्वी देशों के साथ सम्बन्ध ने चीन के नाक में दम कर रखा है जिसके बदले में चीन भारत को उसके पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद में उलझाए रखना चाहता है। चीन कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान का पक्षपोषण करता रहता है। चीन ने अपनी सैन्य क्षमता की उन्नतीकरण किया है जो हिन्दू महासागर तक पहुंच बना रहा है।

इन सबके बावजूद भारत की हिंद महासागर में भौगोलिक स्थिति प्राकृति बढ़त दिलाती हैं भारत का आसियान देशों के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक समरूपता होने से ASEAN राष्ट्र सहानूभूतिपूर्ण के और नजदीकी रिश्ता महशूस करते हैं। इस कारण भारत धर्मिक एकरूपता की भावना को राजनतिक सामरिक सहयोग में बदल सकता है।

भारत के ASEAN पड़ोसियों के प्रति दृष्टिकोण

बांग्लादेश, म्यनमार और थाईलैण्ड ये तीन देश जिनके साथ हमारी भूमि एवं समुद्री सीमाएं मिलती है, वे LEP ये थे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।। देखने वाली बात ये है कि ये तीनों देश राजनतिक दृष्टि से अस्थिर रहे हैं जहां प्रायः पश्चिमी लोकतत्रीय मॉडल विफल होता दिखता है। यहीं पर भारत के विदेश नति का व्यवहारिक पक्ष दिखता है। जहां थाईलैण्ड में थाकसीन शिवानात्रा का तख्ता पलट दिया गया वहीं बंग्लादेश में भी सैनिक शासन का उग्र इतिहास रहा है।''[7] भारत ने अपने विवेक का प्रयोग करे हुए थाईलैण्ड में सैनिक नियंत्राण पर कोई टिप्पणी नहीं की और वहां सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत राजतंत्र को महत्ता प्रदान की। यहां तक कि बांग्लादेश के संबंध में भी भारत के वक्तव्य वहां पर मौजूदा राजनीतिक शून्यता के प्रति वास्तविक चिंता प्रकट करते हैं। 1988 में जब से म्यनमार में सैनिक शासन स्थापित हुआ है तब से यह देश पश्चिमी रोष का निशाना बन गया है। काफी व्यापक विचार–विमर्श के बाद म्यनमार के संबंध में नई दिल्ली की नीतियों ने दो तर्क प्रस्तुत किए सामान्य सीमा के साथ विद्रोहियों से निपटने के लिए सहयेाग की आवश्यकता हैं तथा म्यनमार में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने की भी जरूरत है। हालांकि म्यनमार पर प्रतिबंध लागू करने की समकालीन पश्चिम नीतियों ने इस देश को दुर्भाग्यवश चीनी दायरे के निकट जाने को बाध्य कर दिया।

निष्कर्ष

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट है कि भारत और पूर्वी देशों के ASEAN साथ संबंध फलने–फूलने विकसित होने के अपार संभावना मौजूदइ है। खासकर आर्थिक तकनीकी और सामरिक दृष्टिकोण से जहां सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाएं नैसर्गिक समीपता की स्थापना करते हैं। आज ASEAN और पूर्वी एशिया के देश विश्व के आर्थिक विकास के इंजन बने हुए हैं यही नहीं पूर्वी एशियाई देश दक्षिण एशिया के गरीब देशों और भारत के समृद्धि में एक बेहतर भूमिका निभा सकते हैं। खासकर एक एशियाई बाजार विकसित कर यूरोपीय पुनियन और ASEAN की भांति। ऐसी पूरी संभावना है कि एशिया के ये देश और भारत विकसित और मजबूत बाजार और कुशल जनसंख्या के बल पर विश्व अर्थव्यवस्था के केद्र बनने जा रहे हैं। ऐसे में भारत को ASEAN और पूर्वी एशिया के देशों के साथ आर्थिक सहयेाग और सामरिक सोझादारी को बढ़ावा देना समय की मांग है ऐसे में राजनीतिक साझेदारी और प्राचीनकाल से धार्मिक सांस्कृतिक जुड़ाव भी मददगार होंगे। भारत को पूर्वी देशों के साथ सैन्य अभ्यास बढ़ाते हुए आथ्रिक साझोदारी को गहन करना होगा ताकि चीन के दक्षिण प्रशांत और हिंद महासागर में बठते प्रभुत्व को संतुलित किया जा सके।

संदर्भ

1. डॉ. पुष्पेश पंत श्री पाल जैन – अंतराष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त और व्यवहार पेज, 540.
2. डॉ. प्रमोद कुमार, आर्थिक राजनतिक लाभ हेतु भारत आसियान पुनः जुड़ाव वर्ल्ड फोकस जनवरी 2013 ISSN 2231-0185 पेज – 28.
3. डॉ. प्रमोद कुमार, आर्थिक राजनतिक लाभ हेतु भारत आसियान पुनः जुड़ाव वर्ल्ड फोकस जनवरी 2013 ISSN 2231-0185 पेज – 28, 29.

4. तपन विश्वाल अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध , पेज 105.
5. सापतनी सेन, मजूमदार पेज नं. 7, वल्ड फोकस जनवरी 2013।
6. Prasant Kumar Sahu - inhansing India, increasing engagment with ASEAN countries and China's concern, पेज–138.
7. तपन विश्वास पेज 107, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।